इकाई 5 चॉम्स्की तथा रूपांतरण – निष्पादन व्याकरण

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य
5.1 प्रस्तावना
5.2 भाषा और व्याकरण की संकल्पना
5.3 रूपांतरण – निष्पादन व्याकरण के अध्ययन की प्रविधि
5.4 रूपांतरण – निष्पादन व्याकरण के दो चरण
5.4.1 1957 का मॉडल
5.4.2 1965 का मॉडल
5.5 रूपांतरण – निष्पादन व्याकरण की अद्यतन स्थिति
5.6 सारांश
5.7 अभ्यास प्रश्न

5.0 उद्देश्य

ब्लूमफ़ील्ड के 'भाषा' नामक ग्रंथ के प्रवर्तन से संरचनात्मक भाषाविज्ञान की प्रतिष्ठा हुई, जो भाषा के प्रत्यक्षतः देखे गये मौखिक रूप के आधार पर भाषाओं के वैज्ञानिक विश्लेषण और वर्णन पर बल देता है। चॉम्स्की व्यवहारवादी सिद्धांत का खंडन करते हुए मनोवादी (mentalistic) उपागम पर बल देते हैं, क्योंकि उनके अनुसार भाषा जन्मजात प्रवृत्ति है, मन और विचार से उसका गहरा संबंध है।

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- मनोवादी भाषा विश्लेषण के अभिलक्षण बता सकेंगे;
- चॉम्स्की के योगदान और मान्यताओं की व्याख्या कर सकेंगे;
- रूपांतरण – निष्पादन व्याकरण की प्रविधि समझा सकेंगे;
- व्यवहारवाद तथा मनोवाद में अंतर बता सकेंगे।

5.1 प्रस्तावना

चॉम्स्की रू–नि व्याकरण के प्रवर्तक हैं। वे भाषा को आदत नहीं मानते, क्योंकि भाषा सिर्फ़ आदत होती तो तोता हमारी तरह भाषा बोलता। भाषा के व्यवहार की क्षमता केवल मनुष्यों में है, प्राणी मात्र ध्वनि संकेतों से संप्रेषण करते हैं। मनुष्य भाषा को नियमबद्ध व्यवहार के रूप में अर्जित करता है और नियमों के आधार पर वाक्य बनाकर बोलता है। शिशु (या अध्येता) समाज में भाषा सुनते हैं, उसकी रचना का मन में विश्लेषण करते हैं और उन नियमों को मन में आत्मसात करते हैं। इस तरह भाषा (किसी विशेष भाषा) की दक्षता जन्मजात नहीं है, हमें भाषा को समाज से अर्जित करना होता है। लेकिन भाषा को अर्जित करने की प्रवृत्ति जन्मजात (innate) है, मनुष्यमात्र की विशेषता है।

चॉम्स्की (1935-) पोलेंड मूल के अमेरिकी भाषावैज्ञानिक हैं। आपने भाषाविज्ञान का अध्ययन संरचनात्मक भाषाविज्ञान की परंपरा में ही शुरू किया। लेकिन वे संरचनात्मक अध्ययन से विमुख होते गए। गणित, तर्कशास्त्र का अध्ययन, यूरोप के मध्य युग के मनोवादी संप्रदाय का ज्ञान, भारतीय भाषाविज्ञान की परंपरा आदि से परिचित होने के कारण उन्होंने पाया कि संरचनात्मक विश्लेषण केवल वाक्य संरचनाओं में प्राप्त सतही समता को

पकड़ पाता है, लेकिन समान दीखने वाले लेकिन आंतरिक रूप से भिन्न संदिग्ध वाक्यों की व्याख्या नहीं कर पाता। जैसे :

मोहन सोहन को मूर्ख लगता है।	(मोहन मूर्ख है)
मोहन सोहन को मूर्ख समझता है।	(सोहन मूर्ख है)

उनके अनुसार हम मन में निहित अपने अभीष्ट अर्थ के संदर्भ में ही इन वाक्यों में अंतर कर सकते हैं, ऊपरी संरचना के आधार पर नहीं। इसके लिए हमको मन का आधार लेना पड़ेगा। चॉम्स्की ने 1957 में (Syntactic Structures) नामक युग प्रवर्तक ग्रंथ का प्रणयन किया। ब्लूमफ़ील्ड व्यवहारवादी है तो चाम्स्की मनोवादी। वे भाषा की आदत और अर्थ से पृथक रचना विश्लेषण के विरोधी हैं। वे भाषा का अस्तित्व वक्ता के मस्तिष्क में मानते हैं। उनका व्याकरणिक सिद्धांत रूपांतरण–निष्पादनात्मक व्याकरण (Transformational generative grammar) कहलाता हैं। उनका व्याकरण ब्लूमफ़ील्ड की लगभग सारी मान्यताओं का खंडन करता है और भाषा के विश्लेषण, अर्जन आदि के संदर्भ में भाषा की नयी व्याख्या प्रस्तुत करता है।

भाषा की आदत या व्यवहार द्वारा अर्जन के विरोध में चॉम्स्की भाषा की सृजनात्मकता (Creativity) पर अधिक बल देते हैं। यह सृजनात्मकता मात्र निरीक्षण द्वारा प्राप्त नहीं हो सकती। सृजनात्मकता मन की क्षमता है, जो किन्हीं नियमों के अंतर्गत अब तक न सुनी गयी रचनाओं को भी पहचानता है और नये-नये वाक्यों का उत्पादन (निष्पादन) करता है। कुछ बहुप्रचलित उक्तियों को छोड़कर हम हमेशा, हर बार अपने ढंग से नये वाक्य की रचना करते हैं। भाषा के कुल वाक्यों की संख्या अनंत है, असीमित है। व्यक्ति इन सब वाक्यों को सुनकर भाषा की सही, ग्रहणीय उक्तियों को पहचानता है यह क्षमता उसमें कहाँ से आती हैं?

5.2 भाषा और व्याकरण की संकल्पना

चॉम्स्की तथा उनके संप्रदाय के विद्वानों का कहना है कि भाषा जन्मजात (Innate) गुण है, जो सिर्फ़ मानवों की विशेषता है। यह मानव के विकसित मस्तिष्क के कारण है। अतः किसी और प्राणी में भाषा की प्रवृत्ति नहीं दिखायी पड़ती। बच्चा पैदा होने के बाद से ही भाषा द्वारा संप्रेषण और सीखने की प्रवृत्ति प्रदर्शित करता है। संसार में कोई मानव समाज नहीं है जो भाषा का प्रयोग न करता हो, संसार में कोई सामान्य (normal) व्यक्ति नहीं है जो भाषा का व्यवहार न करता हो। इस तरह भाषा व्यवहार तथ भाषा सीखने की प्रवृत्ति सार्वभौम (Universal) है। इस कारण हमें भाषा में कई सार्वभौम तत्व मिलते हैं। जैसे सभी भाषाओं में संज्ञा और क्रिया शब्दों का होना। इन सार्वभौम तत्वों के कारण भाषाओं के विश्लेषण की एक सामान्य रूपरेखा स्थापित की जा सकती है, जो वास्तव में भाषा की रचना को नहीं, बलकि भाषा बोलने की मानव की क्षमता तथा सर्जनात्मक शक्ति को उद्घाटित करे। चूँकि ब्लूमफ़ील्ड भाषा को एक भाषा के समुदाय के व्यवहार की वस्तु मानते हैं, उनके सिद्धांत में कहीं भाषा के पीछे की मानसिक क्षमता का स्थान नहीं है, न ही इस कारण भाषाओं के सार्वभौम तत्वों का। ब्लूमफ़ील्ड के अनुसार हर भाषा की व्यवस्था अपने में पूर्ण है। ब्लूमफ़ील्ड का भाषाविज्ञान कई भाषाओं की व्यवस्थाओं के अध्ययन के आधार पर निर्मित है। भाषाओं में जितने वाक्य प्रकार मिलते हैं, वे उनके व्याकरण का कलेवर बनते हैं। वह प्रदत्त (Data) पर आधारित है, जबकि चॉम्स्की का सिद्धांत प्रदत्त पर आधारित नहीं, व्यक्ति की क्षमता पर आधारित है। इसी संदर्भ में चॉम्स्की व्याकरणिकता (grammaticalness) तथा ग्रहणीयता (acceptability) की चर्चा करते हैं। Colourless green ideas sleep furiously यह वाक्य व्याकरणिक है, लेकिन अग्राह्य है। इसका निर्णय भाषा भाषी अपनी भाषा की जन्मजात क्षमता के आधार पर करता

है। चॉम्स्की के अध्ययन का आधार वे संगठित (well formed) वाक्य हैं जो व्याकरणिक भी हों और ग्राह्य भी हों। ऐसे वाक्यों का निर्णय व्यक्ति किस आधार पर और किस तरह से करता है?

ब्लूमफ़ील्ड के अनुसार भाषा आदतों का समुच्चय (A set of habits) है। चॉम्स्की के अनुसार भाषा सीमित नियमों का समुच्चय है, जिनसे व्यक्ति भाषा के असीमित वाक्यों का उत्पादन करता है। इस कारण भाषा मात्र व्यवहार नहीं, नियमबद्ध व्यवहार है (Rule governed behaviour)। ये नियम वक्ता तक कैसे पहुँचते हैं? व्याकरण ग्रंथों से? नहीं। व्यक्ति भाषा सीखने की अपनी जन्मजात प्रवृत्ति के कारण भाषा को सुनता है, भाषा का मन में विश्लेषण करता है और भाषा के नियमों को आत्मसात (Internalise) करता है। इन्हीं मन में अंकित नियमों के आधार पर वह भाषा के सही और ग्राह्य वाक्यों का उत्पादन करता है और पहचानता है। चॉम्स्की इन अंकित नियमों को आंतरिक व्याकरण (inbuilt grammar) कहते हैं। इस आंतरिक व्याकरण के संदर्भ में कहा जा सकता है कि वक्ता स्वयं इन नियमों को नहीं जानता, न उद्घाटित कर सकता है। वह भाषा के प्रयोग में मात्र इनका उपयोग करता है। आंतरिक व्याकरण से भाषा के वाक्यों के उत्पादन की शक्ति ही व्यक्ति की उत्पादक या निष्पादक क्षमता (Generative capacity) है। चॉम्स्की के भाषाविज्ञान का एक मुख्य उद्देश्य है इन आंतरिक नियमों को व्याकरण के क्रमिक नियमों के समुच्चय (ordered set of rules) के रूप में दिखाना, जिससे हम व्याकरण के सहारे या संगणक आदि मशीनों के प्रयोग से सही तथा ग्राह्य वाक्यों का निष्पादन कर सकें। इसी कारण चॉम्स्की का व्याकरणिक संप्रदाय निष्पादन व्याकरण या निष्पादन मॉडल कहा जाता है। अगर हम ब्लूमफ़ील्ड के संप्रदाय के अनुसार प्रेक्षणीय (Observable) व्यवहार के रूप में भाषा को मानें, तो भाषा के अनंत वाक्यों की रचना के विश्लनेषण का हमारे पास आधार नहीं है।

नियमबद्ध व्यवहार के रूप में भाषा को देखने के कारण ही हम व्यक्ति की इस सर्जनात्मक शक्ति का स्पष्टीकरण दे पाते हैं। इस दृष्टि से सर्जनात्मकता तथा निष्पादन क्षमता (Generative Capacity) दोनों शब्द समान अर्थ देते हैं। यह ध्यान रखना होगा कि सर्जनात्मक शक्ति मन या मस्तिष्क का गुणधर्म है। निष्पादन क्षमता व्यक्ति में तो है ही, नियमों के स्पष्ट विवरण के साथ यह क्षमता व्याकरण में भी आ जाती हैं। चॉम्स्की भाषाविज्ञान के लक्ष्य की चर्चा करते हुए कहते हैं कि भाषाविज्ञान के सिद्धांत को हमें व्याकरणों की खोज के लिए यांत्रिक ढंग से प्रविधि देने वाला अध्ययन नहीं मानना चाहिए ब्लूमफ़ील्ड आदि के व्याकरणों में (चॉम्स्की के मंतव्य के अनुसार) भाषा विश्लेषण का यह यांत्रिक उपागम दिखायी पड़ता है। व्याकरण क्या होना चाहिए। इस संबंध में उन्होंने 'पर्याप्तता ' का सिद्धांत प्रस्तुत किया है। सबसे पहले है प्रेक्षण की पर्याप्तता (Observational adequacy) – किस जगह कौन-सा प्रयोग होता है इसकी सूचना व्यकारण से मिल जाए। उनके अनुसार संरचनात्मक भाषाविज्ञान में यह गुण तो है। दूसरी है वर्णन की पर्याप्तता (Descriptive adequacy) – व्याकरण न सिर्फ प्रयोगों का औचित्य स्पष्ट करे, बल्कि वक्ता के आंतरिक व्याकरण या भाषा बोलने की क्षमता का भी वर्णन कर सके यह गुण पूर्ववर्ती व्याकरणों में नहीं है। यह पर्याप्तता चॉम्स्की के मॉडल में है। यह व्याकरण न सिर्फ भाषा की रचना की विशेषताएँ स्पष्ट करता है, बल्कि इससे भाषा बोलने वालों के मंन की प्रक्रिया पर भी प्रकाश पड़ता है। चॉम्स्की संप्रदाय के कारण भाषा अर्जन, भाषा दोषों का विश्लेषण आदि विषयों क्षेत्रों में भी नये युग का सूत्रपात हुआ। पहले माना जाता था कि व्यक्ति आदत के रूप में व्यवहार द्वारा भाषा सीखता है। इस संप्रदाय ने बच्चों के भाषा अर्जन के संदर्भ में सिद्ध कर दिया कि बच्चे नियमबद्ध व्यवहार के रूप में भाषा सीखते हैं। हर बच्चे का भाषा सीखने का एक निश्चित क्रम होता है। (जैसे पहले एक शब्द, बाद में दो शब्दों के कुछ वाक्य प्रकार आदि, पहले विवृत स्वर, बाद में संवृत स्वर आदि)।

यह क्रम सार्वभौम भी होता है। छह साल तक सभी बच्चे अपनी मातृभाषा में दक्ष हो जाते हैं। भाषा के अर्जन और व्यवहार में जैविक और मानसिक आधार इस संप्रदाय का प्रमुख अभिलक्षण हैं। तीसरी है विश्लेषण की पर्याप्तता (Explantory adequacy)। यह मान सकते हैं कोई भी व्याकरण सार्वभौम भाषावैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुसार खरा भी होना चाहिए। चॉम्स्की खुद मानते हैं कि ऐसा व्याकरण अभी निर्मित होना संभव नहीं है।

भाषा के सही, गलत आदि के निर्णय में आत्मसात् किये हुए नियम (आंतरिक क्षमता) काम करते हैं। इसी को हम व्यक्ति का अंतर्ज्ञान (intuition) कह सकते हैं। यह ज्ञान वाचकीय या अमूर्त वस्तु नहीं है। यह एक निश्चित जानकारी है। यह भांषा की रचना की जानकारी है। चॉम्स्की इसे दक्षता (competence) का नाम देते हैं। इसी तरह भाषा के व्यवहार्य या ग्राह्य होने का ज्ञान व्यवहार (performance) है। वाक्य की रचना दक्षता का क्षेत्र है, उक्तियों का अध्ययन व्यवहार का।

चॉम्स्की के अनुसार भाषा विश्लेषण का आधार भाषा का वह आदर्श वक्ता-श्रोता है, जो एक समरूप (homogenous) भाषा समुदाय का सदस्य हो और भाषा को अच्छे ढंग से जानता हो। उसका भाषा का ज्ञान ही उसकी भाषिक दक्षता है। भाषा के व्यवहार में चूक, विस्मृति आदि कारणों से उत्पन्न दोष, रुचि और अवधारणा में परिवर्तन के कारण उत्पन्न अंतर आदि दिखायी पड़ते हैं। ये व्यवहार की विशेषताएँ हैं, दक्षता के अंग नहीं। भाषावैज्ञानिक का काम है व्यवहार में व्यक्त भाषिक सामग्री में से वास्तविक भाषा दक्षता के अंतर्निहित नियमों की व्यवस्था को ढूँढ़ निकालना-वास्तविक, प्रत्यक्ष व्यवहार में से भाषा व्यवस्था नामक मानसिक सत्य का अन्वेषण करना। यह सहज ही देखा जा सकता है कि ब्लूमफ़ील्ड सिर्फ प्रत्यक्ष व्यवहार को ही महत्व देते हैं, चॉम्स्की प्रत्यक्ष व्यवहार को मात्र भाषिक दक्षता से उत्पन्न (किंचित दोषपूर्ण या अमानक) व्यापार मानते हैं।

यह सवाल उठता है कि क्या हम वास्तविक, प्रत्यक्ष व्यवहार को ही सिद्धांत की आधार वस्तु नहीं बना सकते। हमने दो तरह के कारक निश्चित किये – व्याकरणिकता और ग्राह्यता। व्याकरणिकता दक्षता की विशेषता है, जब कि ग्राह्यता व्यवहार की। कभी-कभी अव्याकरणिक वाक्य भी व्यवहार में ग्राह्य हो जाता है। जैसे, "वह लड़का, हाँ, वही जो उस दिन समझ गये न जिसको आपने मतलब आपके कार्यालय ने भेजा था।" कभी-कभी व्याकरणिक वाक्य भी अग्राह्य हो जाता है – "जैसे राम के भाई के साले के दोस्त के पिता जी के पड़ोसी के लड़के के ....।" व्यवहार के धरातल पर हमें इस वाक्य को भिन्न प्रकार से व्यक्त करना होगा। इसका कारण हम भाषा के सिद्धांत में नहीं, मनुष्य की कार्य क्षमता, मानसिक क्षमता आदि में देखेंगे लेकिन चॉम्स्की के अनुसार व्यवहार की इन विशेषताओं को जानने के लिए दक्षता का अध्ययन आधार है। अकेले व्यवहार पर आधारित व्याकरण की कल्पना असंगत है।

5.3 रूपांतरण – निष्पादन व्याकरण के अध्ययन की प्रविधि

चॉम्स्की के रू–नि व्याकरण के दो निश्चित युग हैं – उनका 1957 का मॉडल, जो सिन्टैक्टिक स्टक्चर्स नामक ग्रंथ में प्रस्तुत किया गया था और 1965 का मॉडल जो एस्पेक्ट्स आफ़ दि थ्योरी ऑफ़ सिन्टैक्स नामक ग्रंथ में संशोधित रूप में प्रस्तुत किया गया था। पहली पुस्तक में उन्होंने इस व्याकरण के तीन प्रकार के नियमों की संकल्पना प्रस्तावित की :

पदबंध रचना नियम (Phrase structure rules या P.S. Rules)
रूपांतरण नियम (Transformation rules या T Rules)
रूप स्वनिमिक नियम (Morpho phonemic rules या M Rules)

पदबंध रचना नियम : रू–प्र व्याकरण में विश्लेषण वाक्य से शुरू होता है। सही तथा स्वीकार्य वाक्यों को घटकों में दिखाया जाता है। जैसे :

वा → सप + क्रिप (S → NP + VP)

अर्थात् वाक्य को हम संज्ञा पदबंध तथा क्रिया पदबंध के रूप में दिखाते हैं। इस तरह हर एक रचना को हम घटकों के रूप में लिखते हैं। अतः इन्हें पुनर्लेखन नियम (Rewrite rules) भी कहा जाता है। यहाँ हम एक वाक्य के पदबंध रचना नियम देखेंगे।

वाक्य : राम स्कूल गया।

वा → सप + क्रिप	पुनर्लेखन नियम
सप → संज्ञा	
क्रिप → संज्ञा + क्रि	
संज्ञा → राम, स्कूल	शब्द लेखन नियम
क्रि → गया	

इसी वाक्य को हम एक वृक्ष चित्र (Tree diagram) से भी दिखा सकते हैं।

[नोट : यहाँ आये पदबंध शब्द को पूर्णतः संरचनात्मक भाषाविज्ञान का पदबंध न मानें। दोनों में अंतर है।]

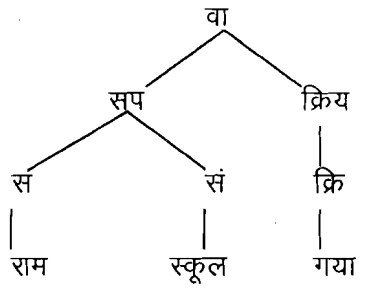

(Nodes

अंतिम शृंखला (Terminal string)

आप देखते हैं कि वाक्य के बाद रचनाओं को दिखाने के लिए (Nodes) आते हैं, जो रचना के द्योतक चिह्न हैं। अंतिम शृंखला में शब्द आते हैं। अन्य शब्द दें तो हम इस पदबंध रचना नियम से सैकड़ों वाक्य निर्मित कर सकते हैं। जैसे :

राम	स्कूल	गया
रहीम	बाज़ार	
जोसफ	स्टेशन	

यह पदबंध रचना नियम को जानने के लिए एक सरलतम उदाहरण था। लेकिन इसमें कई समस्याएँ हैं। राम के साथ सर्वनाम (वह) भी आ सकता है। लेकिन राम, वह आदि 'स्कूल' के स्थान पर नहीं आ सकते। क्रिया में दो कठिनाइयाँ हैं –'सीता' के साथ 'गयी' आएगा। साथ में, गया, जाएगा, जाता है आदि विभिन्न क्रिया रूपों को भी दिखाना होगा। इन सबके संदर्भ में पदबंध रचना लिखने के अन्य कई तकनीक हैं। हम यहाँ उनके विस्तार में नहीं जाएँगे।

रूपांतरण नियम : चॉम्स्की के व्याकरण में रूपांतरण नियम दो प्रकार के हैं। (क) पदबंध रचना नियमों के संदर्भ में हमें व्युत्पन्न वाक्य 'नहीं कर सकते' प्राप्त होता है, लेकिन हिंदी में 'कर नहीं सकते' भी संभव है। ये रूपांतरण नियम से दिखाए जा सकते हैं। दूसरे तरह के रूपांतरण नियम निष्पनन्न वाक्यों की रचना के लिए हैं। एक उदाहरण देखें :

मूल वाक्य :	राम	काम	करता	है
	1	2	3	

व्युत्पन्न वाक्य :	राम से	काम	किया जाता है	
	1	2	3	(वाच्य क्रिया)
रू. नियम	1	2	3	1 से 2 3 (वाच्य क्रिया)

इस प्रकार हम मूल (Kernel) वाक्यों से संबद्ध कई वाक्यों को रूपांतरण नियमों द्वारा व्युत्पन्न करते हैं। इन व्युत्पन्न वाक्यों को पदबंध रचना के नियमों द्वारा अलग से दिखाने की आवश्यकता नहीं है।

रूपस्वनिमिक नियम : हमने ऊपर चर्चा की कि 'गया' के साथ-साथ 'जाता है' आदि को भी दिखाना पड़ता है। पदबंध रचना नियम में क्रिया के अतिरिक्त हमें 'जा' से 'ग–' को व्युत्पन्न करने के लिए भी नियम देने पड़ेंगे। शब्दों के रूपों से संबंधित ये नियम ही रूपस्वनिमिक नियम कहलाते हैं।

5.4 रूपांतरण निष्पादन व्याकरण के दो चरण

चॉम्स्की ने 1957 के ग्रंथ में तीन तरह के नियम बताये और पदबंध संरचना में शब्द देकर विभिन्न वाक्यों की रचना करने की बात कही। इसमें कई समस्याएँ आईं। हम 'पत्थर ने सोचा', 'आम ने बच्चा खाया' जैसे असंगत वाक्य भी निष्पन्न कर सकते हैं। इन्हें रोकें कैसे? चॉम्स्की ने 1965 की पुस्तक Aspects of the Theory of Syntax में अर्थ तत्व को आंतरिक संरचना के विश्लेषण में स्थान देने की बात कही। यहाँ हम दोनों मॉडलों की विशेषताओं को देखेंगे।

5.4.1 1957 का मॉडल

Syntactic Theory के अनुसार भाषा के वर्णन के तीन तरह के नियम हैं :

(1) **पदबंध रचना नियम** Pharase Structure Rules (Ps Rules) **(प.र. नियम)**

$-S \rightarrow NP + VP$
$NP \rightarrow N$
$VP \rightarrow NP + V$
$N \rightarrow$ राम, लड़का, वह, घर, बाज़ार आदि
$V \rightarrow$ गया, पहुँचा, लौटा, आया आदि

इसी को एक वाक्य के वर्णन के संदर्भ में एक वृक्ष चित्र द्वारा प्रकट कर सकते हैं:

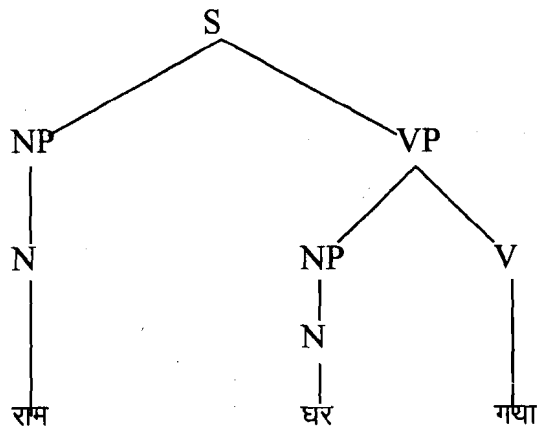

इस प्रकार इस पदबंध नियम से सैकड़ों वाक्यों का निष्पादन होता है।

(2) **रूपांतरण नियम** Transformation Rules (R. Rules) **(रू. नियम)**

हम अकेले पदबंध रचना नियमों से भाषा के सभी वाक्यों का निष्पादन नहीं कर सकते। इनकी अपनी सीमाएँ हैं। प.र. नियमों में एक चिह्न दो चिह्नों में लिखे जाते हैं, जबकि रू. नियम में चिह्नों की शृंखला दूसरी शृंखला में बदली जाती है। जैसे वाक्य रूपांतरण :

$NP_1 + NP_2 + V \quad NP_1 + \text{से} + NP_2 + V + \text{जा (Passive)}$
उसने काम किया

जहाँ V + जो को पुनः अन्य रूपांतरण नियमों से किया जा में बदला जाएगा।

दो तरह के रू. नियम – निहित रचना से अंतिम वाक्य तक पहुँचने के लिए अनिवार्य (जैसे V + जा) तथा एक प्रकार के वाक्य से दूसरे तक पहुँचने के लिए ऐच्छिक (जैसे वाच्य, निषेध, प्रश्न आदि)। यहीं चॉम्स्की नाभिकीय या बीज वाक्यों (kervel sentences) की चर्चा करते हैं। ऐच्छिक रू. नियम नाभिकीय वाक्यों में होते हैं, जो प्रायः सरल, सकर्मक तथा निश्चयार्थक होते हैं (जिनमें पदक्रम, अन्विति आदि के अनिवार्य रू. नियम लागू होंगे)। रू. नियम नाभिकीय वाक्य पर नहीं लागू होते, बल्कि उनकी अंतर्निहित रचना में लगते हैं।

(3) रूप स्वनिमिक नियम (Morphophonemic rules) (M. Rules)

ये उपर्युक्त दोनों नियमों के बाद निष्पन्न रचना को सामान्य वाक्य के उच्चारण के रूप में बदलते हैं।

जैसे : जा + भूतकाल → /गया/
(सम्+सार) संसार → /sansar/
हो +भूतकाल → /हुआ/ आदि

5.4.2 1965 का मॉडल

हम पहले दोनों मॉडलों की तुलना कर लें।

1957	1965	
--	अर्थ तत्व (component)	
प. नियम	वाक्यविन्यासीमा	आधार नियम
रू. नियम	तत्व	रू. नियम
रूपस्वनिमिक नियम	स्वनिक तत्व	

Aspects (1965) के आधार नियमों में एक तरफ प.र. नियम हैं और साथ में शब्दावली (lexicon) है। शब्दावली 'मैंने चाय खायी' जैसी 'गलत' रचनाओं के निष्पादन को रोकती है। उनका 1965 का प्रदर्श निम्न प्रकार से है :

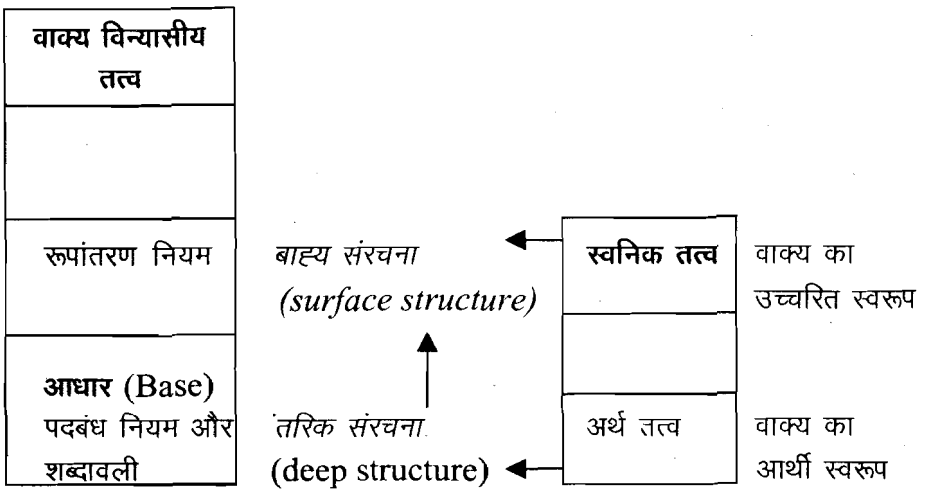

दोनों संरचनाओं के संबंध को निम्न प्रकार से देख सकते हैं :

समान वाह्य रूप, भिन्न आंतरिक संरचना :

John is eager to please
John is easy to please
मोहन सोहन को मूर्ख समझता है।
मोहन सोहन को मूर्ख लगता है।

भिन्न वाह्य रूप, समान आंतरिक संरचना :

The room has two windows.
There are two windows in the room.
हमारा जाना ठीक नहीं
यह ठीक नहीं कि हम जाएँ।

संदेहास्पद रचनाओं को (मैंने भागते चोर को पकड़ा) हम आंतरिक संरचना से स्पष्ट कर सकते हैं।

5.5 रूपांतरण – निष्पादन व्याकरण की अद्यतन स्थिति

1957 में रू–प्र व्याकरण से जो आशाएँ जगीं, वे पूरी नहीं हो पाईं। चॉम्स्की ने कहा था कि भाषा उन सीमित नियमों का समुच्चय है जिनसे हम अनगिनत वाक्यों का निष्पादन करते हैं। लेकिन अभी तक वे गिने-चुने नियम हाथ नहीं लगे। जो थोड़े-से नियम बने, उनमें भी कई अपवाद सामने आए। एक उदाहरण लीजिए। अंग्रेज़ी वाक्य में प्रश्न के निमार्ण के लिए वाक्य के शुरू में Do/Did का उपयोग करते हैं। 'कौन' वाला प्रश्न बनाने क लिए 'who' का उपयोग करते हैं फिर यह who वाक्य के प्रारंभ में चला जाता है।

निश्चयार्थ वाक्य You saw x.
प्रश्नार्थ वाक्य You saw who?
रूपांतरित वाक्य Who did you see –?

(नोट : (–) वह ट्रेस है जहाँ से who का संचरण हुआ है)

लेकिन ये नियम निम्नलिखित वाक्य पर लागू नहीं होंगे, जिनमें दो कर्म पदबंध हैं।

मूल वाक्य You saw x and talked to y.
संचरित वाक्य *Who did you saw x and talk to–?

ऐसे संदर्भों के निवारण के लिए वैयाकरणों ने इन नियमों के नियंत्रण के लिए और नियम बनाए।

इन कठिनाइयों को दूर करने के लिए चॉम्स्की ने रूपांतरण के नियमों को ही तिलांजलि दे दी और नये ढंग से वाक्य विश्लेषण के संशोधित उपागम का प्रवर्तन किया, जिसकी चर्चा आगे करेंगे। यहाँ हम उनकी नई मान्यताओं की चर्चा कर रहे हैं।

(1) **वे अपने नये सिद्धांत को तत्व और विशिष्टता सिद्धांत** (Principles and Parameter Theory) : कहते हैं। हम यह मानते हैं कि दुनिया की सभी भाषाओं में वाक्य में कर्ता और क्रिया होती है। लेकिन इनका क्रम भाषाओं की अपनी विशिष्टता है। इस तरह हम भाषा की अपनी विशेष रचना के बावजूद सार्वभौम व्याकरण की कल्पना कर सकते हैं।

हर भाषा में कुछ सार्वभौम तत्व होते हैं। जैसे प्रक्षेपण तत्व (Projection Principle) भाषाओं में सामान्य रूप से पाया जाता है। उदाहरण के लिए *राम पसंद करता है गलत वाक्य है, क्योंकि 'पसंद कर' के साथ कर्म का होना अनिवार्य है। प्रक्षेपण तत्व यह कहता है कि शब्दों के कुछ अभिलक्षण वाक्य की रचना में प्रक्षेपित हो जाते हैं। यह विचार सभी भाषाओं पर समान रूप से लागू होता है। इस तरह चॉम्स्की का नया उपागम भाषा-विशिष्ट नियमों की अपेक्षा सार्वभौम व्याकरणिक संरचना के तत्वों की खोज करता है।

(2) **एक्स-बार वाक्यविन्यास** (x - Syntax) : पुराने पदबंध रचना नियमों की जगह वाक्य विन्यास के अध्ययन के लिए प्रवर्तित नयी प्रविधि को एक्स-बार वाक्य विन्यास कहा जाता है। पदबंध रचना नियमों को वृक्ष आरेख से दिखाया जाता था और वैयाकरण अपनी इच्छा से वृक्ष में शाखाएँ और टहनियाँ जोड़ देते थे। वे नियम भाषा विशेष पर ही लागू होते थे और एक भाषा के नियम को दूसरी भाषा पर उसी रूप में लागू नहीं किया जा सकता था। एक्स-बार वाक्य विन्यास सार्वभौम सिद्धांत है, क्योंकि यह nodes के नामकरण पर आधारित नहीं है, रचनाओं की त्रिस्तरीय व्यवस्था पर आधारित है। उदाहरण के लिए :

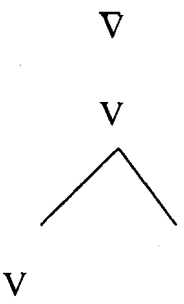

यहाँ V क्रिया पदबंध है,
V मध्यवर्ती रचना है और
V क्रिया शब्द है।
क्रिया पदबंध के भीतर संज्ञा पदबंध (N) का स्थान है। यह विश्लेषण सभी भाषओं पर समान रूप से लागू किया जा सकता है।

(3) चॉम्स्की रूपांतरण निष्पादन नियमों की जगह अपने नये उपागम की घोषणा अपनी नई पुस्तक Lectures in Government and Binding (1981) के माध्यम से करते हैं। उनके नये सिद्धांत में रूपांतरण नियमों की जगह संचरण (movement) के वर्णन का महत्व है। भाषा के दो स्तर हैं – आंतरिक स्तर, जहाँ वाक्य का मूल रूप एक्स-बार वाक्यविन्यास के नियमों के अनुसार रूप लेता है। लेकिन बाह्य संरचना में कई परिवर्तन आ जाते हैं।

मूल रचना : He did see what yesterday.
(tense)
पहला संचरण : Did he t_1 see what yesterday?
दूसरा संचरण : What did he t_1 see t_2 yesterday.

[नोट : t का तात्पर्य है trance]

इस तरह के संचरण के नियम कई वाक्यों के रूपांतरणों को स्पष्ट रूप से समझा सकते हैं, जो सामान्य रूपांतरण नियमों से संभव नहीं है। जैसे :

I expect that he will go.
I expect him to go.
He is expected t to go

(4) **चॉम्स्की के 1981 के अनुशासन और अनुबंध सिद्धांत की प्रमुख विशेषताएँ हैं :** अ–अ सिद्धांत यह मानता है कि भाषा के वर्णन में एक्स-बार सिद्धांत, कारक सिद्धांत आदि कई उप-सिद्धांत काम करते हैं। प्रेक्षण तत्व आदि मूलभूत विचार आदि भी हैं। ये सब उप-सिद्धांत और व्यवस्थाएँ कुल मिलाकर भाषाविज्ञान के इस नये सिद्धांत का निर्माण करते हैं।

इस नई व्यवस्था को हम निम्नलिखित अनुसार एक आरेख से दिखाएँगे, जिसमें आप विभिन्न सिद्धांतों या व्यवस्थाओं के अंतःसंबंध को जोड़ने वाली रेखाओं से जान सकते हैं।

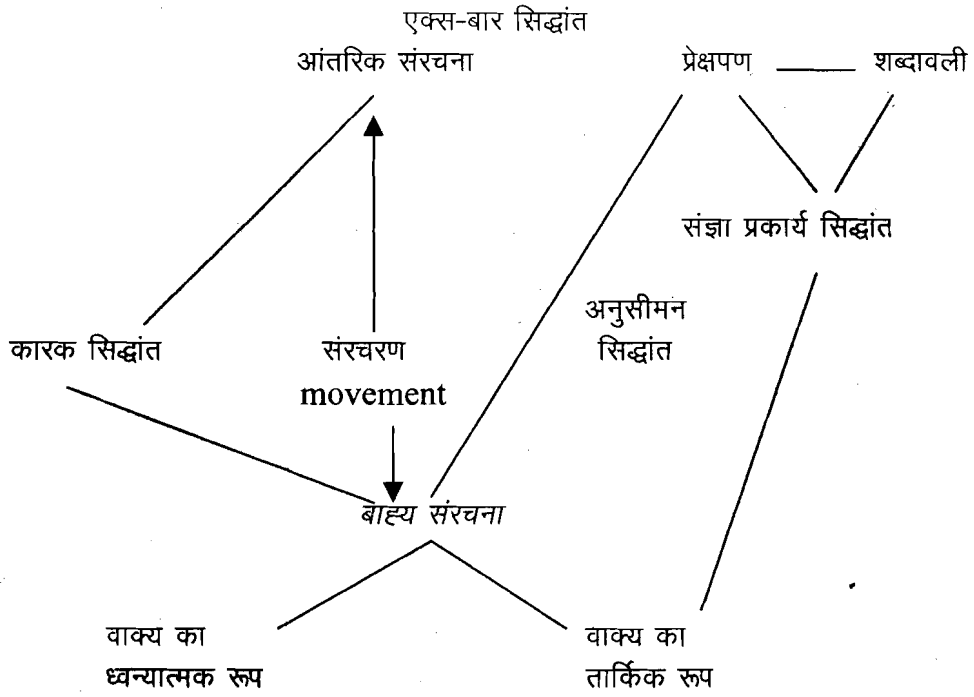

स्रोत : V.J. Cook Chowmsky's Universal Grammar, Basil Blackwell, 1988.

एक्स-बार सिद्धांत से आंतरिक संरचना का निर्माण होता है। इस प्रक्रिया में शब्दावली प्रक्षेपण सिद्धांत के आधार पर वाक्य की विशेषताएँ सुनिश्चित होती हैं। प्रक्षेपण के प्रभाव को हम वाक्य के बाह्य (उच्चरित) रूप में कारक सिद्धांत तथा शब्द के वाक्य के भीतर संचरण से वाक्य की बाह्य संरचना (उच्चरित रूप) निश्चित होती है। अनुसीमन सिद्धांत यह सूचना देता है कि कौन-सा शब्द कहाँ तक जा सकता है। बाह्य संरचना के दो तत्व हैं – ध्वनि तत्व शब्दों के रूप की व्याख्या करता है। तार्किक रूप वाक्य की अर्थगत संगति का निर्धारण करता है। संज्ञा प्रकार्य सिद्धांत (thematic theroy/ θ - theroy) शब्दों के प्राप्तिकर्ता, अनुभवकर्ता आदि प्रकार्य निश्चित करता है, जो अर्थ तत्व को समझने में सहायक है। ये सब सिद्धांत या व्यवस्थाएँ भाषा के वाक्यों की रचना को समझने तथा व्याख्यायित करने में हमारी सहायता करते हैं।

इस आरेख के अतिरिक्त दो और शब्द हैं जिनसे इस उपागम का नाम सर्जित हुआ है। अनुशासन (government) यह बताता है कि कौन-से घटक किन अन्य घटकों की रचना

को नियंत्रित करते हैं। अनुशासन का एक सामान्य उदाहरण अन्विति है जिसमें संज्ञा का लिंग-वचन क्रिया या विशेषण के रूप को प्रभावित करता है। दूसरा प्रमुख उदाहरण परसर्ग है, जिसके कारण संज्ञा या सर्वनाम शब्द का रूप तिर्यक बनता है। जैसेः

वह + को – उसको

लड़का + को – लड़के को

अनुबंध (binding) वाक्य स्तर से ऊपर शब्दों के अंतःसंबंध को परिभाषित करता है। सर्वनाम और उसका पूर्ववर्ती संदर्भ (संज्ञा) वाक्य को समझने के लिए आवश्यक हैं। उदहारण के लिए :

राम अपने को दोष दे रहा है।

राम उसको दोष दे रहा है।

यहाँ 'अपना' का संबंध 'राम' से है, लेकिन 'उस' का संबंध राम से भिन्न किसी अन्य संज्ञा से है, जिसे पूर्व संदर्भ में देखना होगा। चॉम्स्की अपने इस उपागम को इसी संदर्भ में अनुशासन-अनुबंध सिद्धांत (Government and Binding Theroy) की संज्ञा देते हैं।

5.6 सारांश

चॉम्स्की की रू–नि व्याकरण के संदर्भ में हमने अब तक जो चर्चा की उससे यह बात स्पष्ट होगी कि इस उपागम या भाषा विश्लेषण का संप्रदाय पिछले 45 वर्षों में विकसित होता हुआ हमारे सामने उपस्थित है और आज भी इसमें नई तकनीकें जुड़ती जा रही है। लेकिन आरंभ से अब तक इस व्याकरणिक संप्रदाय की एक विशेषता अंतः सूत्र की तरह इसमें व्याप्त है। यह संरचनात्मक भाषाविज्ञान की तुलना में ऊपरी तौर पर व्यक्त संरचनाओं का रचना के स्तर पर विश्लेषण नहीं करता, बल्कि हर वाक्य को भाषिक क्षमता के आधार पर उसकी अंतर्निहित रचना के आधार पर देखने का यत्न करता है। इस कारण इस अध्ययन क्षेत्र में वाक्यों के अंतःसंबंधों को शब्द के संचरण के संदर्भ में व्याख्यायित करने पर बल दिया जता है।

इस उपागम में विकास का एक प्रमुख कारण है। प्रारंभ में यह सोचा गया था कि भाषिक संरचनाओं को रूपांतरण के नियमों से निरूपित किया जा सकता है। लेकिन नियमों की दुर्वह बाढ़ के कारण छोड़ देना पड़ा। हर नियम के साथ उठ खड़े हुए अपवादों और वृक्ष आरेख तैयार करते समय उत्पन्न व्यक्तिनिष्ठ अवधारणाओं के कारण यह स्पष्ट हो चला था कि समस्त भाषाई संरचनाओं को नियमों में बाँध पाना असंभव-सा है। इसी कारण चॉम्स्की ने नियमों के व्याकरण की जगह सिद्धांतों और उप-व्यवस्थाओं की प्रविधि का निर्माण किया, जिसे वे अनुशासन-अनुबंध सिद्धांत कहते हैं। उनकी मान्यता यह है कि नियम निर्धारण की अपेक्षा वाक्य निर्माण की प्रक्रिया को निहित कारणों के संदर्भ में व्याख्यायित करना अधिक उपादेय है। ऐसी व्याख्याएँ सार्वभौम व्याकरण के निर्माण में सहयोगी होती हैं।

5.7 अभ्यास प्रश्न

1. निबंधात्मक प्रश्न

(1) भाषा के बारे में चॉम्स्की के विचारों का विवेचन कीजिए।

(2) रूपांतरण-निष्पादन व्याकरण की प्रविधि के विकास पर प्रकाश डालिए।

2. टिप्पणियाँ

(1) सार्वभौम व्याकरण

(2) भाषाई दक्षता और भाषा व्यवहार

(3) अनुशासन-अनुबंध सिद्धांत